

ग्रिदेवों की जन्मस्थली चित्रकूट में 22 नवंबर को होगा अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन

● कामदण्डि पर्वत को पैरिधक धरोहर धोषित करने की होगी पहल- प्रो गोविंद

संवाददाता। चित्रकूट



ग्रिदेवों की जन्मस्थली चित्रकूटधाम में 22 नवंबर को होने जा रहे अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन की तैयारियां पूरी हो चुकी हैं। सम्मेलन में भाग लेने के लिए विश्व के अंतर्देश से अतिथि आ रहे हैं। इसके साथ ही देश से भी विभिन्न क्षेत्रों के विद्वानों का भी यहां पर मेला लगेगा। इसी को लेकर शुक्रवार केंद्रीय कार्यालय में प्रकार बाती का आयोजन किया गया।

बैठक में अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के मुख्य कार्यालय संयोजक प्रो गोविंद नारायण त्रिपाठी को बताया कि वहां ही चित्रकूट को भागवान राम की तपस्थली के रूप में परिभाषित किया

जात हो, पर वास्तव में यह स्थली सुधी के आरंभ से त्रिपीतों की दिव्य साधना स्थली के रूप में जाना जाता रहा है। इसी कारण से प्रयागराज के पहले सत्र में चित्रकूट की माहिया पर संवाद व मंथन होये और दूसरे सत्र में भात का वाताविक इतिहास एवं संस्कृत पर चर्चा देश व विदेशी विद्वानों के बीच होगी। इसके अलावा 12 वर्ष विताए और यहां पर उड़े त्रिपीतों का संरक्षण करने के लिए द्वारा बुद्धेखड़ के कालाकारों द्वारा मनोहरक प्रस्तुति भी कार्यक्रम का विद्युतीकरण, लाइट व्याख्या, संडक नियांग, विद्यालयों के कायाकल्प, एमआरएफसेंटर नियांग आदि नियांग कार्यों की विस्तृत समीक्षा की। उड़ेने कहा जाएगी। उड़ेने कहा जाएगी।

कामदण्डि विद्वानों की रामायण

की आगामी 22 नवंबर को रामायण

की आगामी 22 नवंबर को रामायण

गुरु पादका पूजन के साथ किया गया 112वें श्री तारा नेत्र यज्ञ का शुभारम्भ



संवाददाता। चित्रकूट

परम पूज्य सन्त रणजीतदास जी महाराज के कर कर्मलों द्वारा स्थापित श्री सदगुरु सेवा संघ एवं अंतर्राष्ट्रीय स्थानीय प्राप्त नेत्र चिकित्सालय में शुभकाल 112 वर्ष नवंबर का अंतर्राष्ट्रीय शुभकाल चतुर्थी को 112 वें श्री तारा नेत्रयज्ञ का शुभारम्भ हुआ।

प्रतिवर्ष इस दिवस पर पूज्य सदगुरुदेव रणजीतदास जी महाराज के जन्म जयन्ती के रूप में उके भक्तजन एवं श्रद्धालु पूर्ण समर्पण एवं श्रद्धालु पूर्ण समर्पण एवं 1950 में चित्रकूट के प्रमोदवन में सदगुरु परिवार के सदस्यों को उपस्थिति में विधि-विधानपूर्वक वैदिक मंत्रोच्चार के साथ आचार्यों द्वारा गुरु पादका पूजन सम्पन्न हुआ।

कार्यकर्ताओं की दीप आयी थी और कच्चे बैरक और टैटे में 950 मोतायांविद के अंपरेशन सफलतापूर्वक हुए थे। तब से लेकर आज तक नेत्रयज्ञ का क्रम अनवरत चलता आ रहा है।

जिसमें आज तक संस्था द्वारा नेत्र यज्ञ के माध्यम से लोगों को रोशनी प्रदान की गई। इसी वर्ष 112 वें तारा नेत्रयज्ञ का शुभारम्भ नहीं होता है। इसी जयन्ती के दूसरे दिन वर्ष 1950 में चित्रकूट के प्रमोदवन में शुभकाल द्वारा प्रथम नेत्रयज्ञ का आयोजन किया गया था। जिसमें मुम्बई से चिकित्सकों एवं

भक्त खादू श्याम के रंग में रोंग नजर आए।

खादू श्याम दरबार में उमड़ी दर्शनार्थियों की भारी भीड़



संवाददाता। कोंक, जालौन

खादू श्याम के भक्तों की भारी भीड़ गुरुवार की रात बड़ा मील उड़ाने वालों जाए गए एवं भजनों पर भक्तजन झूमते हुए खूब नाचे और बाबा के जयकारे लगाए। बाबा खादू श्याम की ज्योति के साथ बाबा को लगाए गए छपन भोग का दर्शन कर लोग कृतकृत्य हो गए बड़ा मील में शुभारात रात संजोए गए। कामदण्डि की शुभारात भजनों का सिलसिला शुभ हुआ जो देर रात तक जारी रहा। कालाकारों ने बाबा खादू श्याम को समर्पित तमाम भजन गाए जिन पर भक्त श्रोता द्वारा रात तक जारी रहे। श्याम तरी वारी संजोए गए। बाबा कार्यक्रम की शुभारात भजनों का प्रतिमा संक्षम पूजन से हुई, तथापि भजनों का सिलसिला शुभ हुआ जो देर रात तक जारी रहा।

कालाकारों ने बाबा खादू श्याम को समर्पित तमाम भजन गाए जिन पर भक्त श्रोता द्वारा रात तक जारी रहे। श्याम तरी वारी संजोए गए। बाबा की जय जयकार करते रहे। श्याम तरी वारी ने दीवाना बना दिया दूसरा मस्ताना बना दिया और जुड़ा ये राधा राधा राधा नाम आए। जैसे भजनों का सुन भक्त भावविभूत हो गए। पागल श्याम प्रेमी परिवार की ओर से आयोजित श्याम भजन संचय में पूरा कौच और बाहर से आए सैकड़ों भक्त खादू श्याम के रंग में रोंग नजर आए।

भक्त खादू श्याम की आगामी 25 नवंबर का अंतर्राष्ट्रीय शुभकाल चतुर्थी के दूसरे दिन वर्ष 2023 को दृढ़ी विदेशी भजनों की शुभारम्भ होगा।

जिसमें आज तक संस्था द्वारा नेत्र यज्ञ के माध्यम से लोगों लोगों को रोशनी प्रदान की गई। इसी वर्ष 112 वें तारा नेत्रयज्ञ का शुभारम्भ नहीं होता है। इसी जयन्ती के दूसरे दिन वर्ष 1950 में चित्रकूट के प्रमोदवन में शुभकाल द्वारा प्रथम नेत्रयज्ञ का आयोजन किया गया था। जिसमें मुम्बई से चिकित्सकों एवं भक्त खादू श्याम के रंग में रोंग नजर आए।

जिसमें आज तक संस्था द्वारा नेत्र यज्ञ के माध्यम से लोगों लोगों को रोशनी प्रदान की गई। इसी जयन्ती के दूसरे दिन वर्ष 1950 में चित्रकूट के प्रमोदवन में शुभकाल द्वारा प्रथम नेत्रयज्ञ का आयोजन किया गया था। जिसमें मुम्बई से चिकित्सकों एवं भक्त खादू श्याम के रंग में रोंग नजर आए।

जिसमें आज तक संस्था द्वारा नेत्र यज्ञ के माध्यम से लोगों लोगों को रोशनी प्रदान की गई। इसी जयन्ती के दूसरे दिन वर्ष 1950 में चित्रकूट के प्रमोदवन में शुभकाल द्वारा प्रथम नेत्रयज्ञ का आयोजन किया गया था। जिसमें मुम्बई से चिकित्सकों एवं भक्त खादू श्याम के रंग में रोंग नजर आए।

जिसमें आज तक संस्था द्वारा नेत्र यज्ञ के माध्यम से लोगों लोगों को रोशनी प्रदान की गई। इसी जयन्ती के दूसरे दिन वर्ष 1950 में चित्रकूट के प्रमोदवन में शुभकाल द्वारा प्रथम नेत्रयज्ञ का आयोजन किया गया था। जिसमें मुम्बई से चिकित्सकों एवं भक्त खादू श्याम के रंग में रोंग नजर आए।

जिसमें आज तक संस्था द्वारा नेत्र यज्ञ के माध्यम से लोगों लोगों को रोशनी प्रदान की गई। इसी जयन्ती के दूसरे दिन वर्ष 1950 में चित्रकूट के प्रमोदवन में शुभकाल द्वारा प्रथम नेत्रयज्ञ का आयोजन किया गया था। जिसमें मुम्बई से चिकित्सकों एवं भक्त खादू श्याम के रंग में रोंग नजर आए।

जिसमें आज तक संस्था द्वारा नेत्र यज्ञ के माध्यम से लोगों लोगों को रोशनी प्रदान की गई। इसी जयन्ती के दूसरे दिन वर्ष 1950 में चित्रकूट के प्रमोदवन में शुभकाल द्वारा प्रथम नेत्रयज्ञ का आयोजन किया गया था। जिसमें मुम्बई से चिकित्सकों एवं भक्त खादू श्याम के रंग में रोंग नजर आए।

जिसमें आज तक संस्था द्वारा नेत्र यज्ञ के माध्यम से लोगों लोगों को रोशनी प्रदान की गई। इसी जयन्ती के दूसरे दिन वर्ष 1950 में चित्रकूट के प्रमोदवन में शुभकाल द्वारा प्रथम नेत्रयज्ञ का आयोजन किया गया था। जिसमें मुम्बई से चिकित्सकों एवं भक्त खादू श्याम के रंग में रोंग नजर आए।

जिसमें आज तक संस्था द्वारा नेत्र यज्ञ के माध्यम से लोगों लोगों को रोशनी प्रदान की गई। इसी जयन्ती के दूसरे दिन वर्ष 1950 में चित्रकूट के प्रमोदवन में शुभकाल द्वारा प्रथम नेत्रयज्ञ का आयोजन किया गया था। जिसमें मुम्बई से चिकित्सकों एवं भक्त खादू श्याम के रंग में रोंग नजर आए।

जिसमें आज तक संस्था द्वारा नेत्र यज्ञ के माध्यम से लोगों लोगों को रोशनी प्रदान की गई। इसी जयन्ती के दूसरे दिन वर्ष 1950 में चित्रकूट के प्रमोदवन में शुभकाल द्वारा प्रथम नेत्रयज्ञ का आयोजन किया गया था। जिसमें मुम्बई से चिकित्सकों एवं भक्त खादू श्याम के रंग में रोंग नजर आए।

जिसमें आज तक संस्था द्वारा नेत्र यज्ञ के माध्यम से लोगों लोगों को रोशनी प्रदान की गई। इसी जयन्ती के दूसरे दिन वर्ष 1950 में चित्रकूट के प्रमोदवन में शुभकाल द्वारा प्रथम नेत्रयज्ञ का आयोजन किया गया था। जिसमें मुम्बई से चिकित्सकों एवं भक्त खादू श्याम के रंग में रोंग नजर आए।

जिसमें आज तक संस्था द्वारा नेत्र यज्ञ के माध्यम से लोगों लोगों को रोशनी प्रदान की गई। इसी जयन्ती के दूसरे दिन वर्ष 1950 में चित्रकूट के प्रमोदवन में शुभकाल द्वारा प्रथम नेत्रयज्ञ का आयोजन किया गया था। जिसमें मुम्बई से चिकित्सकों एवं भक्त खादू श्याम के रंग में रोंग नजर आए।

जिसमें आज तक संस्था द्वारा नेत्र यज्ञ के माध्यम से लोगों लोगों को रोशनी प्रदान की गई। इसी जयन्ती के दूसरे दिन वर्ष 1950 में चित्रकूट के प्रम

